

Integral's 3- day triumphant workshop on Examination Reforms in Higher Education concluded with holistic approach in exams and learning.

Open Book tests, Paper Less Examination, Holistic- Concept based Learning, ICT modes- the way forward in Education.

Integral University along with the Association of Indian Universities (AIU), New Delhi and participants from about 70 Universities across India canvassed in making substantial changes in Examination to escalate the academic standards. The three-day National Workshop was held from October 8 to 10, 2018 steered by the Human Resource development center, Integral. "It was a ecstatic experience at this meet, and the way Integral University, Lucknow has conducted the workshop and providing the necessary infrastructure at such a large scale which is a landmark in AIU's history' said Dr.Amarendra Pani, Deputy Director, AIU, the guest of honour, at the function .

Various Technical Sessions were held during the National workshop to explore and gauge the contemporary assessment techniques and suggesting reforms to the existing Examination system. Prof. Basheer A. Khan, former VC, the Chief guest in the Valedictory session, appreciated that ancient Indian education system with No- examination in Gurukuls and Madarsas, but had a concrete concept of 'Listening and consuming'. "The education system should be transparent and efficient. We can work on a No-Exam system, instead a scholar can be assessed with continuous evaluation modes by efficient Teachers themselves, in which the holistic approach is highlighted and the objective of learning is established".

Prof. Rajeev Pandey, Data Scientist from Lucknow University elaborated on the Right Techniques of Examination achieving aptitudes, interests, personality traits and skill factors. "Open Book Examinations is interesting, engaging and self- boosting which discourages rote learning and is more superficial application of knowledge" he said. "Adding a three- layer impregnable security to their examination system routing the chances of question paper leakage of any sort" added a delegate from Pune University. GNA University, Punjab, shared their experience of conducting a pilot study by adopting a novel method of scanning and evaluating the answer scripts and the success was attributed to the efficiency of ICT service provider, thus highlighting the role of ICT in the ease of evaluation process. Hindustan Institute of Technology and Science, Chennai, showcased their eco-friendly method of paperless examination.

Dr. Syed Nadeem Akhtar, Director Planning and Research, Integral, held the session on "Choice Based Evaluation System and Credit Transfer, a systematic way of describing an educational programme by attaching credits to its components of a study programme such as modules, courses, placements, dissertation work, etc. and reflect the quantity of work enabling potential

employers assess the performance of students on a scientific scale. “UGC has made CBCS mandatory for all universities in 2016 but still it is not being implemented in its true spirit by Indian universities and we can all aim to strive to make it possible” he said.

Dr. Syed Aqeel Ahmad, Director, HRDC, Integral pronounced the workshop a breeding ground of optimism and reforms that would surely make the Indian education system qualitative and efficient.

उच्च शिक्षा में परीक्षा सुधार पर इंटीग्रल की 3 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला परीक्षा और सीखने में समग्र दृष्टिकोण के साथ संपन्न हुई।

ओपन बुक टेस्ट, पेपर कम परीक्षा, समग्र- संकल्पना आधारित शिक्षा, आईसीटी मोड- शिक्षा में आगे बढ़ने का पद्धति है ।

इंडियन यूनिवर्सिटीज (एआईयू), नई दिल्ली एसोसिएशन के साथ इंटीग्रल यूनिवर्सिटी और अकादमिक मानकों को बढ़ाने के लिए परीक्षा में पर्याप्त बदलाव करने में भारत भर में लगभग 70 विश्वविद्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। तीन दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला 8 अक्टूबर से 10, 2018 को मानव संसाधन विकास केंद्र, इंटीग्रल विश्वविद्यालय द्वारा संचालित की गई थी। एआईयू के उप निदेशक डॉ० अमरेंद्र पाणि ने कहा, "इस बैठक में यह एक उत्साही अनुभव था, और इंटीग्रल यूनिवर्सिटी, लखनऊ ने कार्यशाला का आयोजन किया और इस तरह के बड़े पैमाने पर आवश्यक बुनियादी ढांचा प्रदान करना जो एआईयू के इतिहास में एक ऐतिहासिक स्थल है।

समकालीन मूल्यांकन तकनीकों का पता लगाने और गेज करने और मौजूदा परीक्षा प्रणाली में सुधारों का सुझाव देने के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्र आयोजित किए गए थे। वैदिक सत्र में मुख्य अतिथि प्रोफेसर बशीर ए खान ने गुरुवार और मद्रस में नो-परीक्षा के साथ प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की सराहना की, लेकिन 'सुनना और उपभोग करने' की ठोस अवधारणा थी। "शिक्षा प्रणाली पारदर्शी और कुशल होना चाहिए। हम नो-परीक्षा प्रणाली पर काम कर सकते हैं, इसके बजाय एक विद्वान को कुशल शिक्षकों द्वारा निरंतर मूल्यांकन मोड के साथ मूल्यांकन किया जा सकता है, जिसमें समग्र दृष्टिकोण को हाइलाइट किया जाता है और सीखने का उद्देश्य स्थापित किया जाता है "।

लखनऊ विश्वविद्यालय के डेटा वैज्ञानिक प्रोफेसर राजीव पांडे ने ऊंचाई, हितों, व्यक्तित्व लक्षणों और कौशल कारकों को प्राप्त करने वाली परीक्षा की सही तकनीक पर विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, "ओपन बुक परीक्षा दिलचस्प, आकर्षक और आत्म-बढ़ावा देने वाली है जो लिखने व सीखने को हतोत्साहित करती है और ज्ञान का अधिक सतही अनुप्रयोग है।" पुणे विश्वविद्यालय के एक प्रतिनिधि ने कहा, "किसी भी प्रकार के प्रश्न पत्र रिसाव की संभावनाओं को पार करने के लिए अपनी परीक्षा प्रणाली में तीन-स्तर की

अपरिवर्तनीय सुरक्षा जोड़ना"। जीएनए विश्वविद्यालय, पंजाब ने उत्तर स्क्रिप्ट स्कैनिंग और मूल्यांकन करने की एक उपन्यास विधि अपनाकर एक पायलट अध्ययन करने का अपना अनुभव साझा किया और सफलता आईसीटी सेवा प्रदाता की दक्षता के लिए जिम्मेदार ठहराया गया, इस प्रकार मूल्यांकन प्रक्रिया की आसानी में आईसीटी की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। हिंदुस्तान इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, चेन्नई ने पेपरलेस परीक्षा के पर्यावरण-अनुकूल तरीके का प्रदर्शन किया।

डॉ। सैयद नदीम अख्तर, निदेशक योजना और अनुसंधान, इंटीग्रल ने "चॉइस आधारित मूल्यांकन प्रणाली और क्रेडिट ट्रांसफर" पर सत्र आयोजित किया, जो एक अध्ययन कार्यक्रम के अपने घटकों को क्रेडिट संलग्न करके एक शैक्षिक कार्यक्रम का वर्णन करने का एक व्यवस्थित तरीका है जैसे मॉड्यूल, पाठ्यक्रम, प्लेसमेंट, शोध प्रबंध कार्य, आदि। संभावित नियोक्ता सक्षम करने में काम की मात्रा को दर्शाता है जो वैज्ञानिक स्तर पर छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करता है। "यूजीसी ने 2016 में सभी विश्वविद्यालयों के लिए सीबीसीएस अनिवार्य कर दिया है, लेकिन फिर भी इसे भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा अपनी सच्ची भावना में लागू नहीं किया जा रहा है और हम सभी इसे संभव बनाने के लिए प्रयास कर सकते हैं।"

डॉ। सैयद अकील अहमद, निदेशक, एचआरडीसी सह कुलपति इंटीग्रल विश्वविद्यालय ने कार्यशाला को आशावाद और सुधारों का एक प्रजनन स्थल बताया जो निश्चित रूप से भारतीय शिक्षा प्रणाली को गुणात्मक और कुशल बना देगा।

انٹیکرل یونیورسٹی میں تین روزہ پروگرام اکزامنیشن اصلاحات اختتام پذیر

انٹیکرل یونیورسٹی میں جاری تین روزہ ورکشاپ آج اختتام پزیر ہوا۔ قابل ذکر ہے کہ یہ پروگرام ایسوسی ایشن آف یونیورسٹیز۔ نئی دہلی۔ اور انٹیکرل یونیورسٹی کے شعبہ ایچ۔ آر۔ ڈی کے باہم اشتراک و تعاون سے کامیابی کے ساتھ آج پایہ تکمیل تک پہنچا۔ جن میں بہت سے امور پر تبادلہ خیال ہوا خاص طور سے اوپن بک ٹسٹ پیپر لیس اکزام، ایچ، سی، آئی، سی ٹی طریقہ کار، اور بہت سے ایسے نکات پر توجہ مرکوز کی گئی جن کی مدد سے امتحان کے طریقہ کار کو بہتر بنایا جاسکتا ہے۔ تاکہ تعلیم کے معیار کو آگے بڑھتے ہوئے طلباء کے اندر تخلیقی صلاحیتوں کو پروان چڑھایا جاسکے۔ مہمان خصوصی کی حیثیت سے شرکت کرنے آئے ڈاکٹر امریندر پنی۔ ڈپٹی ڈائریکٹر اے، آر، یو نے اس پروگرام کے انعقاد، اسکے طریقہ کار، اور انٹیکرل یونیورسٹی کی ہمہ تن جہد کی تعریف کرنے ہوئے کہا کہ یقیناً یہ پروگرام اکزامنیشن میں اصلاحات لانے کیلئے ایک اچھا قدم ثابت ہوگا۔

انٹیکرل یونیورسٹی کے شعبہ ایچ۔ آر۔ ڈی۔ سی۔ ڈائریکٹر ڈاکٹر سید عقیل احمد نے نامہ نگار کو بتایا کہ اس پروگرام میں امتحانات اور انکی اصلاحات جیسے اہم موضوع پر تفصیل کے ساتھ بحث مباحثہ ہوا، تجویزیں پیش کی گئیں، سفارشات بھی کی گئیں۔ اور مختلف شعبوں کے انعقاد کے ساتھ بہت کامیابی کے ساتھ اختتام پذیر ہوا۔ پروفیسر بشیر خاں۔ سابق وائس چانسلر نے اس پروگرام کے انعقاد پر مسرت کا اظہار کرتے ہوئے کہا کہ تعلیم اور طریقہ امتحان دونوں کو ایک دوسرے سے جدا نہیں کیا جاسکتا، وقتاً فوقتاً انکی اصلاح کی ضرورت ہے۔ اس سلسلہ میں ورکشاپ بہ سنگ میل کی حیثیت رکھتا ہے، امتحام کے اصلاحی اقدامات سے جوڑنے پر زور دیا۔ اپنے مفصل بیان میں انہوں نے کہا یہ سسٹم جس کو یو، جی، سی نے پہلے ہی سے ساری یونیورسٹیز کے لئے لازمی قرار دیا ہے ضروری ہے کہ اس کے اہم نکات کو جانا جائے، اس کے ذریعہ طلباء کو جو تعلیمی مواقع ملتے ہیں انکو فائدہ پہونچایا جائے۔ ہم سب کو عملی اعتبار سے اپنے سطح پر نافذ کرنے کی کوشش کرنی چاہئے۔

یونیورسٹی کے بانی چانسلر پروفیسر سید وسیم اختر نے اس کامیاب انعقاد پر تمام ذمہ داروں، اراکین خاص طور سے ان مہمانوں کا شکریہ ادا کیا جنہوں نے اس اہم معلوماتی پروگرام کیلئے وقت نکالا۔